भूमिका

संपूर्ण विश्व में हमारा देश भारत कला और संस्कृति की दृष्टि से अपना एक विशिष्ट स्थान रखता है। भारतीय स्थापत्य के इतिहास में मध्य प्रदेश में स्थित चंदेल राजाओं द्वारा निर्मित खजुराहो के मंदिर अपना प्रमुख स्थान रखते हैं, साथ ही अपने कलात्मक मूर्तिशिल्प के वैभव के लिए संपूर्ण विश्व में प्रसिद्ध है। खजुराहो के ये मंदिर हमें बीते हुए समय की याद दिलाते हैं। उस बीते हुए समय की जिसमें एक गौरवमय इतिहास छिपा हुआ है। यह इतिहास उन योद्धाओं का, वास्तु शिल्पकारों का, कवियों का, संगीतज्ञों का, संतों और दार्शनिकों का है जो समय के लम्बे अंतराल के बीच अपनी ठोस, धरोहर के रूप कलात्मक अवशेषों में छोड़ गए हैं। खजुराहो का नाम लेते ही दो बातें हमारे मस्तिष्क में उभर जाती है एक तो चंदेल राजाओं का शौर्य व वीरतापूर्ण इतिहास व दूसरा उनके शासन काल में निर्मित खजुराहो के भव्य एवं विशाल मंदिर जिनका खण्ड–खण्ड मूर्तिशिल्प व अलंकरण से सुशोभित है।

भारतीय साहित्य एवं कलाएँ अनेक गुणों एवं भावनाओं से पल्लवित रही हैं और जैसे–धार्मिक भावना, नैतिक भावना, रहस्यानुभूति तथा प्रतीकात्मकता आदि। साहित्य एवं कला के आधार–कथावस्तु, चरित्र चित्रण, अलंकार, रस आदि भी रहे, वेद उपनिषद्, रामायण, महाभारत, गीता आदि समान रूप में प्रेरणा के स्त्रोत रहे हैं। कला के स्मारकों जैसे–सारनाथस्तम्भ, सांची के स्तूप, भरहुत व अमरावती के स्तूप, नागार्जुनकोण्डा के स्तूप, मथुरा शैली की प्रतिमाएँ गुप्त काल में बनी प्रतिमाएँ, महाबलीपुरम्, ऐलिफेंटा, एलोरा, कोणार्क मंदिर, खजुराहो के मंदिर, माउण्ट आबू के जैन मंदिर आदि में प्रांतीय विशेषता होते हुए भी भारतीयता की ही झलक दिखाई देती है।

भारतीय साहित्य में कलात्मक विवेचन हमेशा से होता रहा है। जैसे नाट्यशास्त्र में मुद्राओं व रसों का वर्णन चित्रसूत्र में चित्रों के निर्माण का वर्णन

और समरांगणसूत्रधार में वास्तु संबंधी नियम सविस्तार वर्णित हैं। जिन्होंने भारतीय कला को एक नया रूप प्रदान किया।

जब मैंने वनस्थली विद्यापीठ (राज.) के दृश्य कला विभाग में चित्रकला विषय में एम.ए. हेतु प्रवेश लिया तो हमारे पाठ्यक्रम में सौंदर्यशास्त्र के अंतर्गत भारतीय सौंदर्यशास्त्र व पाश्चात्य सौंदर्यशास्त्र सम्मिलित थे। इन दोनों विषयों में मुझे भारतीय सौंदर्यशास्त्र अधिक रूचिकर लगा। जिसका श्रेय मैं अपनी गुरू को देती हूँ। क्योंकि उन्होंने इस विषय की गहनता व भारतीय कला के सभी पक्षों को समझाया। भारतीय कला में रस व मुद्राओं का अंकन अजंता में बहुत ही सुंदर ढंग से चित्रित किया है। इसके साथ भारतीय मूर्तिशिल्प में भी इनका प्रयोग होता रहा है। खजुराहो के मूर्तिशिल्प में भाव–भंगिमाएँ अत्यन्त प्रसिद्ध हैं। जिनके बारे में मैंने सुना था या किताबों में पढ़ा था परन्तु जब मुझे खजुराहो के इन मंदिरों को प्रत्यक्ष देखने का अवसर मिला तो इन मंदिरों व मूर्तिशिल्प के देखकर मुझे नाट्यशास्त्र व चित्रसूत्र का स्मरण हुआ और अपने शोध विषय के रूप में मैंने इनका चयन किया।

प्रस्तुत शोध प्रबंध को विषय वस्तु के अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से छः अध्यायों में विभक्त किया गया है–

प्रथम अध्याय के अंतर्गत खजुराहो का विशिष्ट परिचय भौगोलिक, ऐतिहासिक, धार्मिक, सांस्कृतिक एवं कलात्मक पृष्ठभूमि के आधार पर किया गया है। मध्यप्रदेश में स्थित छतरपुर जिले में बसा छोटा–सा गाँव खजुराहो मंदिर स्थापत्य व मूर्तिशिल्प के लिए विश्व प्रसिद्ध है। खजुराहो के मंदिर चंदेल शासकों के शासन काल में नवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध से लेकर बारहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में निर्मित हुए। इन्हें धार्मिक दृष्टि से तीन वर्गों में बांटा जा सकता है। शैव, वैष्णव व जैन धर्म से संबंधित यह मंदिर अपने कलात्मक सौंदर्य की दृष्टि से भारत को एक अमूल्य देन है।

द्वितीय अध्याय के अंतर्गत मंदिर स्थापत्य का परिचय प्रस्तुत किया गया है। समूचे भारत वर्ष में विभिन्न देवी–देवताओं के मंदिर आज भी पाए जाते हैं, मंदिर भारतीय स्थापत्य कला का एक महत्वपूर्ण पक्ष है। भारतीय मंदिरों की एक अत्यन्त विकसित अवस्था खजुराहो के मंदिरों में दृष्टिगोचर होती है। जिसका सविस्तार विवेचन इस अध्याय में किया गया है।

तृतीय अध्याय के अंतर्गत संस्कृत के प्रमुख ग्रंथ नाट्यशास्त्र, चित्रसूत्रम् व समरांगणसूत्रधार इन शास्त्रों में निहित कलात्मक विवेचन के संदर्भों को खजुराहो के स्थापत्य व मूर्तिशिल्प के संदर्भ में खोजने का प्रयत्न किया गया है। नाट्यशास्त्र में मुख्य रूप से नृत्य कलाओं का वर्णन समाहित है। जिसके अंतर्गत सभी ललित कलाओं को समाविष्ट किया गया है। चित्रसूत्रम् में नौ अध्याय हैं जिनमें चित्र व मूर्तिशिल्प की रचना किस प्रकार करनी चाहिए व चित्रों एवं मूर्ति रचना के नियमों को बताया गया है और समरांगणसूत्रधार में वास्तुकला का विस्तृत वर्णन किया गया है। इन तीनों ग्रंथों को ही इस अध्याय का आधार बना कर कलात्मक विवेचन किया गया है।

चतुर्थ अध्याय के अंतर्गत स्थापत्य रचना पर सामान्य उल्लेख जिस प्रकार नाट्यशास्त्र में नाट्य मण्डप को आकार की दृष्टि से तीन प्रकार से विभाजित किया, मंदिर वास्तु में इसके उदाहरणों को प्रस्तुत किया गया है। खजुराहो के मूर्ति शिल्प में अनुपात, मुद्रा व भाव–भंगिमा में नाट्यशास्त्र के प्रभाव का उदाहरण सहित विवेचन किया गया है।

पंचम अध्याय के अंतर्गत खजुराहो की मूर्तियों में रस संबंधी उदाहरण प्रस्तुत किए गए हैं। जिनमें श्रृंगार रस, वीर रस, रौद्र रस, करूण रस, अद्‌भुत रस व शांत रस का विवेचन मुख्य रूप से किया गया है।

षष्ठम अध्याय के अंतर्गत खजुराहो के मूर्तिशिल्प का शास्त्रीय आधार पर विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है।

उपसंहार में समस्त अध्यायों का निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है।

आभाराभिव्यक्ति

प्रस्तुत शोध कार्य की सम्पन्नता पर आज मुझे यह अनुभव हो रहा है कि ज्ञान जितना कष्ट साध्य है उतना ही आनंदमय भी है। अपने शोध कार्य की सम्पन्नता पर मैं उन सभी लोगों की आभारी हूँ जिन्होंने मुझे मेरे शोध कार्य की सिद्धि में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग प्रदान किया।

सर्वप्रथम मैं उस परमपिता परमेश्वर के प्रति अपना आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने सदैव मुझे ऊर्जा प्रदान कर अदृश्य रूप में मेरा साथ दिया, जिससे मैं अपना शोध कार्य सम्पन्न करने में सक्षम हो पाई।

मैं अपनी शोध निर्देशिका **प्रो. किरन सरना,** प्रोफेसर, दृश्यकला विभाग, वनस्थली विद्यापीठ की अत्यन्त आभारी हूँ जो इस शोध कार्य के आदि से अंत तक मेरी प्रेरणा स्त्रोत व मार्गदर्शिका रही हैं। उनके अनवरत, अविचल व परिपक्व मार्गदर्शन के अभाव में, मैं इस शोध कार्य को वर्तमान स्वरूप में शायद ही प्रस्तुत कर पाती।

वनस्थली विद्यापीठ के कुलपति प्रो. आदित्य शास्त्री, सहकुलपति प्रो. ईना शास्त्री की भी मैं तहेदिल से आभारी हूँ जिन्होंने समय–समय पर मुझे हरसंभव सहयोग प्रदान किया।

शोध कार्य की सम्पन्नता पर मैं अपनी माता श्रीमती मिथलेश देवी और पिता डॉ. विजय पाल सिंह की ह्रदय से आभारी हूँ, उनके विश्वास और प्रेरणा के आधार पर ही मैं इस कार्य को पूर्ण करने में सक्षम हो पाई हूँ, उनका आशीर्वाद और स्नेह हमेशा मेरे साथ रहा है। मैं अपने भाई आशीष कुमार चौधरी व बहन साक्षी चौधरी की आभारी हूँ, इन्होंने समय–समय पर मेरे साथ शोध क्षेत्र में जाकर अपना अमूल्य समय मुझे दिया, साथ ही अपने मित्रों व

शुभचिन्तकों की भी बहुत आभारी हूँ जिनका स्नेह और सहयोग मुझे हमेशा मिलता रहा।

मैं केन्द्रीय पुस्तकालय, कला मंदिर एवं समस्त विद्यापीठ परिवार का आभार व्यक्त करती हूँ।

साथ ही टंकणकर्ता एवं टीटू थीसिस सेंटर, जयपुर के सदस्यों का आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने मेरे शोध प्रबंध को अंतिम रूप देने में मेरी सहायता की।

कु. मीनाक्षी

चित्र सूची

मानचित्र

संख्या	शीर्षक
1.1	भारत में मध्य प्रदेश
1.2	मध्यप्रदेश में खजुराहो व छतरपुर
1.3	खजुराहो में मंदिर समूह

रेखाचित्र

संख्या	शीर्षक
1	लक्ष्मण मन्दिर की योजना
2	पताक हस्तमुद्रा
3	त्रिपताक हस्तमुद्रा
4	कर्त्तरीमुख हस्तमुद्रा
5	अर्धचन्द्र हस्तमुद्रा
6	अराल हस्तमुद्रा
7	शुकतुण्ड हस्तमुद्रा
8	मुष्टि हस्तमुद्रा
9	शिखर हस्तमुद्रा
10	कपित्थ हस्तमुद्रा
11	खटकामुख हस्तमुद्रा
12	सूचीमुख हस्तमुद्रा
13	पद्म कोश हस्तमुद्रा

संख्या	शीर्षक
14	सर्पशीर्ष हस्तमुद्रा
15	मृगशीर्ष हस्तमुद्रा
16	कंगुल हस्तमुद्रा
17	अलपद्य हस्तमुद्रा
18	चतुर हस्तमुद्रा
19	भ्रमर हस्तमुद्रा
20	हंसास्य हस्तमुद्रा
21	हंसपक्ष हस्तमुद्रा
22	सन्देश हस्तमुद्रा
23	मुकुल हस्तमुद्रा
24	उर्णनाभ हस्तमुद्रा
25	ताम्रचूड हस्तमुद्रा
26	अंजलि हस्तमुद्रा
27	वैष्णव स्थान
28	समपाद स्थान
29	वैशाख स्थान
30	मण्डल स्थान
31	आलीढ़ स्थान
32	प्रत्यालीढ़ स्थान

रंगीन चित्र

संख्या	शीर्षक
1.1	शेर (चंदेल राजाओं का चिन्ह)
1.2	मतंगेश्वर मंदिर
1.3	लक्ष्मण मंदिर
1.4	मतंगेश्वर मंदिर के गर्भगृह में स्थापित शिवलिंग
1.5	कंदरिया महादेव मंदिर के गर्भगृह में स्थापित शिवलिंग
1.6	सहस्त्रमुखी शिवलिंग
1.7	वराह अवतार
1.8	नरसिंह अवतार
1.9	वामन अवतार
1.10	राम–सीता
1.11	कृष्ण बांसुरी बजाते हुए
1.12	बलराम व रेवती
1.13	शिखर
1.14	पैर से कांटा निकालती अप्सरा
1.15	शृंगार करती अप्सरा
1.16	नूपुर बांधते हुए अप्सरा
1.17	महावर लगाती अप्सरा
1.18	चतुर्भुज भगवान
1.19	सुंदरियाँ
1.20	कोर्णाक व खजुराहो के मूर्तिशिल्प की तुलना
1.21	मंदिरों में अलंकरण

संख्या	शीर्षक
1.22	मिथुन मूर्ति
1.23	संगीत व नृत्यरत मूर्ति शिल्प
2.1	तोरण
2.2	श्रीरंगनाथ जी का मंदिर (वृंदावन)
2.3	गर्भगृह
2.4	लक्ष्मण मंदिर
2.5	वातायन
2.6	वाह्यभित्ति (जंघा)
2.7	प्रवेश द्वार के ऊपर भगवान सूर्य की अद्वितीय प्रतिमा (लक्ष्मण मंदिर)
2.8	वेल बूटे, कीर्तिमुख तथा हाथियों की पंक्ति
2.9	भगवान गणेश
2.10	दैनिक जीवन
2.11	नाग कन्या
2.12	मंदिर का चबूतरा
2.13	जन–जीवन
2.14	अप्सराएँ
2.15	नाग कन्याएँ
2.16	उप मंदिर
2.17	विश्वनाथ मंदिर का मुख्य द्वार
2.18	छोटी प्रतिमाओं की पंक्ति
2.19	पार्वती प्रतिमा
2.20	महामण्डप की छत
2.21	वर्तमान समय में जीर्णद्धार किए मंदिर
2.22	विभिन्न विषय

संख्या	शीर्षक
2.23	गंधर्व
2.24	शार्दूल
2.25	पार्श्वनाथ
4.1	अप्सराएँ
4.2	वरहा मंदिर
4.3	अलंकृत दरवाजे व खम्बे
4.4	स्तम्भों पर उत्कीर्ण मूर्तिशिल्प
4.5	खिड़कियाँ (झरोखे)
4.6	मिथुन मूर्ति शिल्प
4.7	पताक हस्त मुद्रा
4.8	वाद्य यंत्र बजाते हुए वादक
4.9	अराल हस्त मुद्रा
4.10	मुष्टि हस्त मुद्रा
4.11	कपित्थ हस्त मुद्रा
4.12	खटकामुख हस्त मुद्रा
4.13	सूची मुख हस्त मुद्रा
4.14	अंजलि हस्त मुद्रा
4.15	विष्णु की मूर्ति समभंग मुद्रा
4.16	देवांगनाएँ त्रिभंग मुद्रा
4.17	शिव अपनी पत्नी के साथ
4.18	अप्सराएँ अतिभंग मुद्रा
4.19	अप्सराएँ अतिभंग मुद्रा
4.20	अप्सराएँ अतिभंग मुद्रा
4.21	वैष्णव स्थान मुद्रा

संख्या	शीर्षक
4.22	समपाद स्थान मुद्रा
4.23	वैशाख स्थान मुद्रा
4.24	मण्डल स्थान मुद्रा
4.25	आलीढ़ स्थान मुद्रा
4.26	प्रत्वालीढ़ स्थान मुद्रा
5.1	महावर लगाती अप्सरा
5.2	दर्पण के मुख देखती अप्सरा
5.3	अप्सरा
5.4	अप्सरा
5.5	काम संबंधी मूर्तिशिल्प
5.6	नायक–नायिकाओं में संयोग शृंगार
5.7	युद्ध दृश्यों में 'वीर रस'
5.8	प्रहार करते हुए 'रौद्र रस'
5.9	करूण रस
5.10	शार्दुल 'अद्‌भुत रस'
5.11	पार्श्वनाथ भगवान
6.1	विष्णु की प्रतिमा
6.2	ब्रह्मा की प्रतिमा
6.3	पार्वती की प्रतिमा
6.4	त्रिशूल के साथ भगवान शिव
6.5	युद्ध दृश्यों में खड़ग
6.6	ढाल लिए सैनिक
6.7	पाश लिए भगवान विष्णु
6.8	भैंरव घण्टा लिए

संख्या	शीर्षक
6.9	पार्वती दर्पण लिए
6.10	अर्धनारीश्वर
6.11	भगवान विष्णु गदा व शंख लिए
6.12	भगवान विष्णु चक्र लिए
6.13	भगवान गणेश फरशी लिए
6.14	खटवांग लिए प्रतिमा
6.15	सर्प लिए गणेश व शिव भगवान
6.16	कुंत लिए मूर्तिशिल्प
6.17	कमण्डल लिए ब्रह्मा व विष्णु
6.18	कमल लिए भगवान विष्णु
6.19	बंशी, ढोलक/मृदंग लिए वादक
6.20	आलस्य युक्त अस्सरा
6.21	दर्पण लिए अप्सरा
6.22	नृत्यरत अप्सरा
6.23	पैर से कांटा निकालती अप्सरा
6.24	कमर पर पुत्र धारण किए अप्सरा
6.25	पीठ दिखाकर नृत्यरत अप्सरा
6.26	आलिंगन मुद्रा
6.27	केश संवारते हुए अप्सरा
6.28	सौंदर्य युक्त अप्सरा
6.29	शार्दूल
6.30	कीर्तिमुख

साहित्य समीक्षा

1	पुस्तक	खजुराहो की देव–प्रतिमाएँ
	लेखक	रामाश्रय अवस्थी
	प्रकाशन	ओरिएण्टल पब्लिशिंग हाउस, आगरा
	संस्करण	1967
	पृष्ठ	285
	मूल्य	70.00 रूपये

'रामाश्रय अवस्थी' की पुस्तक 'खजुराहो की देव–प्रतिमाएँ' इस ग्रंथ में सात अध्याय हैं। प्रथम अध्याय में भूमिका के तौर पर खजुराहो के मंदिर स्थापत्य की सामान्य जानकारी का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया गया है और स्थानीय मूर्तिकला की विशेषताओं से भी परिचय कराया गया है। उसके बाद पांच अध्यायों में क्रमशः गणपति, विष्णु, सूर्य आदि की प्रतिमाएँ वर्णित हैं। इन पांच अध्यायों में उपरोक्त देवताओं के स्वरूप और प्रत्येक के उद्‌गम, विकास एवं विभिन्न रूपों की वैज्ञानिक पद्धति पर विस्तृत तुलनात्मक समीक्षा की गई है। सभी उपलब्ध रूपों की व्याख्या के साथ तालिका दी गई है एवं प्रतिमा लक्षणों की विवेचना की गई है। मूर्तियों की विशेषताओं पर प्रकाश डालने का प्रयत्न किया गया है। भिन्नता की दृष्टि से उन्हें सामान्यतः वर्गों, प्रकारों तथा उपप्रकारों में विभाजित किया गया है। इन पांच अध्यायों के अंत में एक–एक परिशिष्ट दिया गया है, जिसमें संबंधित अध्याय में वर्णित खजुराहो प्रतिमाओं के प्राप्ति स्थानों की सूची गई है। अंमिम अध्याय, उपसंहार में उपर्युक्त देव–प्रतिमाओं की सामान्य विशेषताओं की चर्चा हुई है। चित्रावली में दिए गए चित्रों के चयन में मूर्तियों के प्रतिमा विज्ञान संबंधी महत्व का ही ध्यान रख गया है। प्रतिमा विज्ञान का विषय गहन होने पर भी इसकी लेखन शैली रोचक है और पुस्तक सुपाठ्य है। शिल्प शास्त्रों से पारिभाषित शब्दावली संकलन करने का लेखक का प्रयास सफल और सराहनीय है।

2 पुस्तक प्राचीन भारतीय कला, वास्तु कला एवं मूर्तिकला
लेखक डॉ. श्याम शर्मा
प्रकाशन रिसर्च पब्लिकेशन, जयपुर
संस्करण 1989
पृष्ठ 191

'डॉ. श्याम शर्मा' ने अपनी पुस्तक 'प्राचीन भारतीय कला, वास्तुकला एवं मूर्तिकला' है। लेखक ने इस पुस्तक को सात अध्यायों में विभक्त किया है। सर्वप्रथम कला का अर्थ, प्राचीन समय में कला का स्वरूप व कला का विकासक्रम बताते हुए भारत में विभिन्न युगों में विभिन्न राजवंशों के समय कला की क्या प्रगति हुई तथा कैसी–कैसी कलाकृतियों का सृजन हुआ आदि बताने की चेष्टा की गई है।

3 पुस्तक प्राचीन भारतीय प्रतिमा–विज्ञान एवं मूर्तिकला
लेखक डॉ. ब्रजभूषण श्रीवास्तव
प्रकाशन विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
संस्करण 19891998
पृष्ठ 415

'डॉ. ब्रजभूषण श्रीवास्तव' अपनी पुस्तक 'प्राचीन भारतीय प्रतिमा–विज्ञान एवं मूर्ति–कला' संस्करण 1998ई. प्रस्तुत ग्रंथ में लेखक में मूर्तियों का विवेचन प्रतिमा शास्त्रीय परम्परा और शिल्पगत सौंदर्य इन दोनों रूपों में किया है। प्रस्तुत ग्रंथ के अनुक्रम को दो खण्डों में विभक्त किया गया है प्रथम, प्रतिमा खण्ड जिसके अंतर्गत शास्त्रीय लक्षणों पर निर्मित प्रतिमाओं की व्याख्या है और द्वितीय मूर्तिकला खण्ड इसके अंतर्गत विविध कालों में और विविध शैलियों में निर्मित मूर्तियों की संरचना, सौंदर्य और भाव संबोध की दृष्टि से देखने का प्रयास किया गया है।